om-21 shivratri-2014-final -print_Layout 4 1/20/2014 7:28 PM Page 3

परमात्म मिलन की कहानी-महानुभावों की जुबानी

आज कलियुग में जहाँ एक ओर समाज में भ्रष्टाचार और कुरीतियों का बोलबाला है, वहीं दूसरी ओर विज्ञान भी अपने चरम पर पहुँच चुका है। ऐसे में एक तरफ लोग परमात्मा के अस्तित्व को भी नकारने लगे हैं, तो दूसरी तरफ लोग उसे सच्चे हृदय से पुकार भी रहे हैं। गीता में भी भगवान ने कहा है कि हे अर्जुन! जब मैं इस सृष्टि पर अवतरित होता हूँ तो मुझे कोटों में कोई और कोई में भी कोई ही जान पाता है। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय में आज वही आत्मा-परमात्मा के मिलन का वही महाकुंभ और स्वर्णिम सृष्टि की स्थापना का कार्य चल रहा है। परमात्म मिलन की शैली अपने आप में अलग और दिव्य है। कुछ व्यक्ति विशेष के परमात्म मिलन के अनुभव, उन्हीं के मुखाविन्द से...

माउण्ट आबू में स्वर्ग सा अनुभव, साक्षात् भगवान से मिलन

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय में शान्ति व सद्भाव का संदेश दिया जाता है। माउण्ट आबू में आने पर मुझे स्वर्ग जैसा अनुभव हुआ। हम साक्षात भगवान से मिले, उन्होंने हमसे बात की। पैसों से मखमल के गद्दे तो खरीदे जा सकते हैं, बढ़िया बिस्तर भी लिए जा सकते हैं परन्तु गहरी नींद आध्यात्म से ही प्राप्त हो सकती है। यह संस्था सम्पूर्ण विश्व में स्थापित होने के कारण, आध्यात्मिकता चारों ओर फैल रही है जो कि समाज के लिए ऑक्सीज़न का काम कर रही है।

- महामण्डलेश्वर श्री जनारदन महाराज सतपंत, फैजपुर।

साकार बाबा से मिलने पर स्वयं भगवान से वार्तालाप की भासना

यह ब्रह्मा बाबा द्वारा अनुसंधान किया हुआ मानव कल्याण हेतु ज्ञान है - जिससे लोगों में अच्छे संस्कार ग्रहण करने की इच्छा पैदा होती है, जिससे वे सन्मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित होते हैं। यह ज्ञान ईश्वरीय शिक्षा का है, अलौकिक व पारलौकिक शक्तियों का है।

यह ज्ञान ब्रह्मा बाबा की तपस्या के द्वारा जन-जन तक पहुँचा। साकार बाबा से मिलने पर मुझे स्वयं भगवान से वार्तालाप करने की भासना आई।

-करुणाकरण भंते, राष्ट्रीय अध्यक्ष, बौद्ध गया महाबोधि विहार, ऑल इंडिया कमिटि

परमात्मा से मिलते ही मैं दूसरी दुनिया में पहुँच गया

सभी को ईश्वरीय शिक्षाओं व शक्तियों से अवगत कराने का कार्य वर्षों से ये संस्था करती आ रही है इसलिए इसे ईश्वरीय विश्वविद्यालय कहा जाता है। मैं जब पहली बार परमात्मा से मिला तो मैं उन्हें देखकर बिल्कुल ही भाव-विभोर हो गया और मुझे ऐसा लगा कि मैं इस दुनिया में ही नहीं हूं, मैं किसी दूसरे लोक की सैर कर रहा हूं। कुछ समय के लिए मैं अपने गांव, मठ तथा सभी सांसारिक बातों को भूल गया था। मैं माउण्ट आबू बार-बार आना चाहता हूं। वहां का वातावरण बहुत अच्छा है और उनका अतिथियों के आदर-सत्कार करने का तरीका सभी को सीखने लायक है। **-सिद्धेश्वर स्वामी जी,** नागपूर बेलगाम।

परमपिता के ज्ञान से ही सुंदर भविष्य आएगा

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की पढ़ाई का पहला उद्देश्य है कि व्यक्ति पहले स्वयं को जाने कि मैं कौन हूं, मेरा कर्तव्य क्या है, मेरे माता-पिता कौन हैं, अपना असली देश क्या है, अपनी संस्कृति क्या है? मेरा मानना है कि आज जिस प्रकार शिक्षा पद्धति पश्चिमी होती जा रही है तो अगर उसको फिर अपनी संस्कृति की ओर लाना है तो इसके लिए ऐसे ईश्वरीय विश्व विद्यालय का होना आवश्यक है। आज समाज की सबसे बड़ी ज़रूरत शांति है जो कि ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा ही समाज को प्राप्त हो सकती है। उन्हीं के ज्ञान से सुंदर भविष्य आयेगा और समाज तथा राष्ट्र को उत्कृष्ट करेगा।

-शास्त्री कपिल जीवनदास, मैनेजिंग ट्रस्टी श्री स्वामी नारायण गुरुकुल।

"आदम को खुदा मत कहो, आदम खुदा नहीं, लेकिन खुदा के नूर से, आदम जुदा नहीं"

मैंने महसूस किया कि साकार ब्रह्मा के तन में ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप परमात्मा, आदम को आत्मा के साथ विराजमान थे। उस दिन से मैंने ईश्वरीय जीवन को दृढ़ता से अपनाया और यह निश्चय किया कि समस्त जीवन बापदादा की श्रीमत पर चलकर ईश्वरीय सेवा में लगाऊँगा। ऐसा अनुभव और संस्कारों में परिवर्तन करना किसी साधारण व्यक्ति का काम नहीं था। यह तो उसी साधारण मानवी तन में अवतरित परमपिता परमात्मा का ही कार्य था। मैं जब पिताश्री जी के सम्मुख जाता था, मुझे वही ज्योति उनके मस्तक पर नज़र आती थी और उनके नयन-मुलाकात करते ही अपरम-अपार अलौकिक आनंद का अनुभव होता था। इतना मीठा, इतना प्यारा था शिवबाबा।

-ब्र.कु.निर्वैर, महासचिव, ब्रह्माकुमारीज़

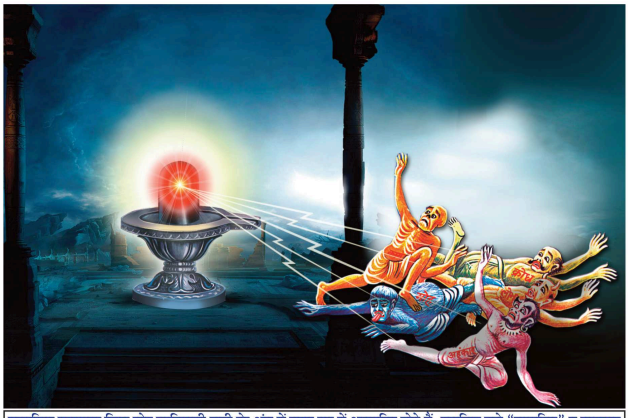

परमपिता परमात्मा शिव घोर कलियुगी रात्री के अंत में ब्रह्मा तन में अवतरित होते हैं, इसलिए उसे "जन्मदिन" न कहकर महाशिवरात्रि कहा जाता है। अभी वह समय चल रहा है और परमात्मा 5 विकारों - काम, क्रोध, लोभ, मोह एवं अहंकार - रूपी अंधियारे को भस्म कर नव सृष्टि रचने का कार्य कर रहे हैं।

साकार बाबा से प्रथम मिलन की अनुभूति

सन 1962 में जब दीदी चन्द्रमणि जी अमृतसर की पार्टी को बाबा से मिलाने मधुबन ले गई थी तो मैं भी उसमें शामिल थी। मेरे जीवन में प्रभु-मिलन का वह स्वर्णिम अवसर आया जिसकी वर्षों से मेरे अंदर तीव्र इच्छा थी। जब मैंने बाबा की दिव्य छवि को देखा तो उनकी शीतल और शक्तिशाली दृष्टि ने मुझे भाव-विभोर कर दिया। बाबा ने मेरे दिल को द्रवीभूत करने वाला अलौकिक प्यार दिया तथा वरदान देते हुए कहा कि बच्ची बहुत नष्टोमोहा है, बहुत योगयुक्त है। बच्ची ने जल्द ही अपने कर्मबन्धनों को काटा है - ऐसे कहते हुए बाबा ने दिल से मेरी बहुत प्रशंसा की।

-ब्र.कु.राज, नेपाल

मैं बाबा के निमंत्रण पर ही मधुबन गई थी

जब मैं मुम्बई में ज्ञान में आई थी तो बाबा को पत्र लिखा था कि मैं आपसे मिलना चहती हूँ। बाबा ने तुरन्त मुझे पत्र लिखा कि बच्ची बाबा के पास बहुत संतोष है, बाबा भी देखना चाहता है कि यह कौनसी संतोष है। तुरन्त आ जाओ बाबा के पास। शुरू-शुरू में बाबा किसी बच्चे को जब पहली बार मिलते थे तब गोद लेते थे। जब मेरी बारी आई तो मैं खड़ी हो गई। बाबा मुझे कहने लगे कि जब बच्चे मुझसे मिलने आते हैं तो मैं भी परमधाम से इस तन में आता हूँ। ये बोल मुझको पक्के हो गए कि ब्रह्मा बाबा नहीं परन्तु स्वयं परमात्मा शिव बाबा बोल रहे हैं। मधुबन पहुँचने पर बाबा ने मुझे इतना प्यार दिया कि मैं एक पल में सारी दुनिया भूल गई। **-ब्र.कु.संतोष,** महाराष्ट्र ज़ोनल इंचार्ज, ब्रह्माकुमारीज़

हर श्वांस में बाबा बसा है

परमात्मा ने हमारी पालना बिल्कुल माँ-बाप समान की है। बाबा हमेशा हम लोगों को ठाकुर कहकर पुकारते थे। हमें यह लगता ही नहीं कि हम परमात्मा के साथ रह रहे हैं, क्योंकि परमात्मा ने बिल्कुल माँ-बाप जैसी पालना की। मैं बाबा के संग और बाबा मेरे संग हमेशा रहता है। हमारे हर श्वांस में बाबा बसा है। शिव बाबा ने हमें अपना बना लिया और आज अपने सेवा का महान कार्य करा रहा है। परमात्मा के साथ हमारा पूरा जीवन सफल हो गया। मनुष्य आत्माएं सभी परमात्मा के बच्चे हैं और सभी को आकर अपना वर्सा लेना चाहिए। समय बहुत तेज़ी से बीत रहा है। समय निकल जाने के बाद तो कुछ नहीं बचेगा।

-राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी, अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

बाबा की पालना का रिटर्न देने का समय

पहली बार जैसे ही पिताश्री का दर्शन हुआ तो मुझ आत्मा में एक विशेष अलौकिक आनंद और आत्म-तृप्ति का भाव भर गया। मैंने बाबा को मन ही मन अपना आदर्श और गुरु मान लिया। हमारा पहला-पहला पाठ है कि हम शरीर नहीं आत्मा हैं परन्तु साथ-साथ परमात्मा निराकार होते हुए भी साकार में आकर हम बच्चों को पालना दे रहे हैं केवल इसी बात के लिए कि बच्चे किसी भी तरह निराकार से जुड़े रहें और भगवान को अपना साथी बनाएं। बाबा अभी हम बच्चों को पक्का करा रहे हैं कि बच्चे, आने वाले समय में आपको स्वयं परमपिता परमात्मा का साथी बनकर उनको प्रत्यक्ष करना है और वो दिन दूर नहीं जब हमें स्वयं परमात्मा का माध्यम बनकर सभी को उसकी अनुभूति करानी होगी। बाबा ने जो हम बच्चों को इतनी पालना दी है उसका रिटर्न देने का समय आ गया है।

-ब्र.कु.करुणा, ब्रह्माकुमारीज़ मल्टी मीडिया के अध्यक्ष, मा.आबू

सदा कम्बाइन्ड स्वरूप ही सामने रहता था

साकार बाबा के दिनों में मुझे तो सदा स्मृति में यही रहता था कि साकार बाबा के तन का आधार लेकर निराकार शिव परमात्मा सतयुगी दुनिया का पुनर्निर्माण कर रहे हैं। सदा कम्बाइण्ड स्वरूप ही सामने रहता था। फिर भी प्रातः मुरली के समय जब बाबा सभी को दृष्टि देते थे तो उस समय बहुत ही शक्तिशाली अनुभव होता था। मुरली के बीच-बीच में कई बार ऐसा लगता था कि स्वयं निराकार सर्वशक्तिवान, पतित-पावन अपनी वाणी के माध्यम से हम बच्चों में शक्ति भर रहे हैं। बाबा बहुत ही दृढ़ एवं निर्भय थे। स्वभाव मधुर एवं सरल था, ऊँची हस्ती परन्तु असीम निर्मानता, अद्भुत परख शक्ति एवं निर्णय शक्ति। स्पष्ट परन्तु सरल, सदा निमित्त भाव बाबा में देखा। करावनहार शिव बाबा ही है, अतः ब्रह्मा बाबा सदा स्वयं को निमित्त करनहार ही समझते थे। उनके संग से उनके कुछेक गुण स्वतः ही स्वयं में भी अनुभव होने लगते थे। -

ब्र.कु.अमीरचंद, क्षेत्रीय निदेशक पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, ब्रह्माकुमारीज़

देह का भान भूल आंतरिक खुशी से हुआ भरपूर

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय में दिया जाने वाला आध्यात्मिक ज्ञान मनुष्यों का दिव्यीकरण करता है तथा आत्मा की शक्तियों का विकास करता है। जब मैं पहली बार अपने परमपिता परमात्मा से मिला तो मुझे अपने देह का भान नहीं रहा। मुझे ऐसी कशिश हुई कि परमात्मा से पवित्रता की लाईट निकल रही है और मुझे भी उस लाईट के द्वारा पवित्रता का अनुभव हो रहा है। मैं अपने-आपको बहुत हल्का महसूस कर रहा था। और मेरा मन बस शांति, प्रेम और खुशी से भर गया। परमात्मा जब आता है तो हमें अपनी आत्मिक शक्तियों का भान हो जाता है। उनके सानिध्य में आकर मैं वास्तविकता से रूबरू हुआ कि परमात्मा मेरा पिता है, मैं उनका बच्चा हूं। मन ही मन एक विचार स्फुरित हुआ, जैसे कि बस अब उनके प्यार में ही जीवन बिताना है। जबकि परमात्मा से मिलन दुनिया के लिए एक कल्पना है लेकिन मेरे लिए तो साक्षात परमात्मा के साथ का अनुभव बना रहता है।

-ब्र.कु.ओम प्रकाश, क्षेत्रीय निदेशक इंदौर, ब्रह्माकुमारीज़

कराया दिव्य साक्षात्कार कहा आओ बनायें नई दुनिया

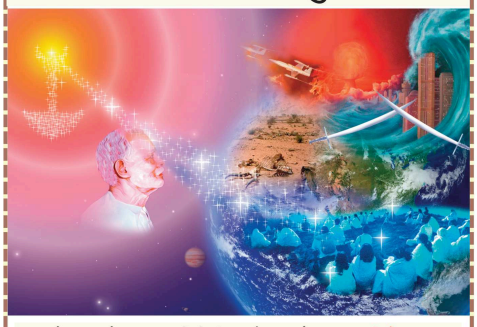

दादा लेखराज को हुआ था नई दुनिया की स्थापना एवं कलियुग के विनाश का साक्षात्कार

दादा लेखराज एक दिन वाराणसी में अपने मित्र के यहां गए थे कि उन्हें रात्रि के समय अचानक इस दुनिया के भयंकर महाविनाश का साक्षात्कार होने लगा। ऐसे विनाशक हथियारों का साक्षात्कार हुआ जो उस समय इसकी परिकल्पना तक नहीं थी। फिर इसके बाद नई दुनिया की स्थापना के लिए आसमान से उतरते देवी देवताओं का भी साक्षात्कार हुआ। दादा लेखराज को यह बात समझ नहीं आई। फिर जब वे अपने घर पहुंचे और एक दिन अपने कमरे में बैठे थे तब उनके अन्दर निराकार परमात्मा ने प्रवेश कर साक्षात्कार कराया तथा स्वयं परमात्मा ने परिचय दिया कि:- निजानन्द स्वरूपम् शिवोहम्, शिवोहम् आनन्द स्वरूपम् शिवोहम्, शिवोहम् प्रकाश स्वरूपम् शिवोहम् शिवोहम्

इस परिचय के साथ स्वयं परमपिता परमात्मा ने यह आदेश दिया कि अब तुम्हें एक नई दुनिया बनानी है। यहीं से शुरू हुआ परमपिता परमात्मा के सृष्टि परिवर्तन का गुप्त कार्य जो आज तक अनवरत चल रहा है।

यहाँ आकर मेरा प्यार भगवान से और बढ़ गया

आध्यात्मिक ज्ञान में ही आत्मा का अध्ययन समाया हुआ है। आत्मा से सम्बन्धित कोई भी बात आध्यात्मिकता में आती है। जैसे आत्मा क्या है, कहां से आती है, क्यों है ये संसार में, आत्मा का महत्व क्या है, आत्मा का पिता कौन है? मुझे परमात्मा से प्यार हमेशा से ही था, लेकिन जब मैंने पहली बार ब्रह्मा बाबा को देखा तो मुझे लगा कि यही मेरे सच्चे पिता हैं और उनके द्वारा जब परमपिता शिव परमात्मा का ज्ञान मिला तो मुझे पता चला कि मेरा सच्चा पिता तो वो है। तब से मेरा प्यार परमात्मा के लिए और भी बढ़ गया। मनुष्य तो समझते हैं परमात्मा तो सजा देता है, भगवान से डरना चाहिए लेकिन अब हमें ये अनुभव हुआ कि भगवान से डरना नहीं बल्कि भगवान से प्यार करना चाहिए। जब मैंने पहली बार अव्यक्त बापदादा को देखा तो मुझे बाबा से शक्ति का अनुभव हुआ और महसूसता हुई कि ये परमात्मा ही बोल रहे हैं कोई मनुष्य आत्मा नहीं बोल रही है।

-ब्र.कु.शीलू, वरिष्ठ राजयोगा शिक्षिका, माउण्ट आबू

बाबा में भगवान की ही एक्टीविटी देखती थी

ब्रह्मा बाबा की चलन से हमें भगवान के चरित्र का अनुभव होता था। हर समय हमारा ध्यान बाबा के चेहरे पर, बाबा की दृष्टि पर और बाबा के बोल पर ही होता था कि भगवान क्या करते हैं और कैसे करते हैं। साकार बाबा को देखने का हमारा उद्देश्य यही होता था कि भगवान उस रथ द्वारा कैसे देखते हैं, कैसे बोलते हैं और कैसे बच्चों के साथ खेलपाल करते हैं। ब्रह्मा बाबा में शिव बाबा है, यह निश्चय करने के लिए हमें मेहनत नहीं करनी पड़ी। जैसे आज लोग पूछते हैं कि ब्रह्मा बाबा में ही परमात्मा आता है, कैसे विश्वास करें? लेकिन कभी भी ऐसा प्रश्न हमें आया ही नहीं। हमें तो हर पल यही अनुभव होता था कि हम भगवान के साथ हैं और वह अपना कार्य कर रहा है और हमें भी वैसा ही करना है। बाबा की दृष्टि इतनी मीठी और प्यारी होती थी कि हमें साकार रूप में भी दिखाई पड़ती थी और महसूस भी होती थी। ज्ञान एक होते हुए भी बाबा हर आत्मा की योग्यता अनुसार ही धारणा बताते थे।

-दादी रतनमोहिनी, संयुक्त मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

स्वयं निराकार परमात्मा से मिल चुका हूँ

यह एक ऐसा विश्वविद्यालय है जहाँ जाति, धर्म, देश का कोई भेदभाव नहीं है। यहाँ ही वह शिक्षा मिलती है जिससे हम स्वयं को और परमात्मा पिता को पहचान सकते हैं। यह और संस्थाओं से भिन्न है क्योंकि यहाँ सभी को उच्च संस्कार जागृत करने की शिक्षा मिलती है। मैं इस संस्था में आकर स्वयं निराकार परमात्मा से मिला, बात की। उस अनुभव को बयान करना भी मुश्किल है। किसी भी धर्मपिता, महान नेता ने विश्व की इतनी सेवा नहीं की है जितनी परमात्मा शिव के प्रवेश के पश्चात् ब्रह्मा बाबा ने की। **-वी.ईश्वरैया, पूर्व एक्टिंग चीफ जस्टिस,** आंध्र प्रदेश उच्च न्यायालय

मधुबन का वातावरण एक "सुपरपावर" के कंट्रोल में

स्वयं परमात्मा का ज्ञान यहाँ से प्राप्त हो रहा है। यह शिक्षा सभी मज़हबों के लिए है। वाणी में मधुरता, कर्मों में पवित्रता लाने की यहाँ से शिक्षा मिलती है। शान्तिवन में आते ही सहज योग लग जाता है, कोई व्यर्थ विचार नहीं आते। मधुबन में जो कुछ हो रहा है वह साधारण मनुष्य के बस की बात नहीं है। यहाँ के वातावरण को एक सुपरपावर कंट्रोल करती है। इस आध्यात्मिक ज्ञान की तो स्कूली बच्चों को भी सुविधा मिलनी चाहिए ताकि वे कुरीतियों से पहले ही बच जाएं। **-पूर्व जस्टिस एल.सी.भादू,** बिलासपुर हाई कोर्ट

परमात्मा शिव इस संस्था द्वारा बना रहे मनुष्य को देवता

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय, और विद्यालयों व संस्थाओं से अलग इसलिए है क्योंकि इसकी स्थापना स्वयं परमात्मा शिव ने की है। इस विश्व विद्यालय का उद्देश्य है मनुष्य को देवता बनाना। हमारे शास्त्रों, पुराणों में भी लिखा हुआ है कि भगवान एक साधारण तन में अवतरित होते हैं लेकिन जो सात्विक बुद्धि वाले लोग होते हैं वे उसको पहचान लेते हैं। परमात्मा से मिलने के बाद हमारा जीवन दिव्यता से भर जाता है, हमारे जीवन में आध्यात्मिक उन्नति आने लगती है और वो दिव्य शक्तियां प्राप्त होती हैं जिनका हम हर परिस्थितियों में उपयोग कर सफलता को प्राप्त कर सकते हैं। **-धरमेश,** सिटिंग जज, राजकोट।

परमात्म मिलन पर व्यर्थ से मिला छुटकारा

सभी को जीवन जीने की कला परमात्मा स्वयं इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय के माध्यम से देते हैं। इसीलिए इसे गॉडली यूनिवर्सिटी कहा जाता है। जब मैं परमात्मा से मिला तो मेरे सारे व्यर्थ संकल्प समाप्त हो गए और पॉज़ीटिव संकल्पों की रचना होने लगी, मेरे शरीर में ऊर्जा का सतत् प्रवाह होने लगा और ऐसा अनुभव हुआ कि इसके अलावा दुनिया में सब कुछ साहरीन है। इस ज्ञान के द्वारा जो हमें एकाग्रता की शक्ति मिली है उसके द्वारा हमें दो पार्टियों के बीच मतभेद को सॉल्व करने में बहुत मदद मिलती है। इस दुनिया का परिवर्तन इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय के माध्यम से ही संभव है।

-वी.डी. राठी, हाई कोर्ट जज, ग्वालियर